पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

सहायक पाठ्यक्रम

2024-2025

सहायक पाठ्यक्रम

उद्देश्य-

1. पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य व्याकरण के मूल सिद्धान्तों से अवगत कराते हुये विद्यार्थी के संस्कृत भाषा के गम्भीर अध्ययन के लिये समर्थ बनाना।
2. पाणिनी शिक्षा के माध्यम से वर्णों के उच्चारणस्थान एवं प्रयत्नादि का बोध कराना।
3. व्याकरण जगत् की महत्वपूर्ण कृति अष्टाध्यायी के स्मरण द्वारा मस्तिष्क को तीव्र बनाना।
4. पदच्छेद, विभक्ति, समास आदि के माध्यम से अष्टाध्यायी के सूत्रों की प्रथमावृत्ति कराना।
5. रचनानुवादकौमुदी के माध्यम से संस्कृतभाषा में अनुवाद एवं वाक्यरचना विषयक बोध प्रदान करना।
6. वैदिक साहित्य के माध्यम से वेद उपनिषद् दर्शन एवं अन्य वैदिक ग्रन्थों का क्षेप रूप से बोध कराना।
7. षोडशसंस्कार, वर्णाश्रमव्यवस्था, पुरुषार्थचतुष्टय आदि विषयों से अवगत कराना।
8. अभिनवपाठावली के माध्यम से गद्यों का अन्वय, शब्दार्थ और हिन्दी भाषा में अनुवाद के द्वारा जीवन के नैतिक मूल्यों का बोध कराना।

परिणाम-

1. व्याकरण के मूल सिद्धान्तों से अवगत हो कर विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण के गम्भीर अध्ययन हेतु प्रवृत्त हो जाता है।
2. विद्यार्थी मानवजीवन के उत्कृष्ट मूल्यों को धारण करके अपना उत्कर्ष और समाज के लिये उत्कृष्ट योगदान देता है।
3. संस्कृतभाषा को लिखने पढने बोलने व समझने में समर्थ हो जाता है।
4. इनके अध्ययन से मानवीय मूल्यों व सिद्धान्तों से अवगत हो कर स्वयं में जीवन के उत्कृष्ट आदर्शों को धारण करता हुआ समाज को उन आदर्शों से अवगत कराता हुआ उत्कृष्ट जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है।
5. महाभाष्यकार ने कहा है-
   एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति।

PROPOSED SCHEME FOR CBCS SYSTEM IN
BRIDGE COURSE OF SANSKRIT-VYAKARANAM

Semester - I

S.No.	Course Code	Course Title	MH	Lecture per week			Total Credit
				L	T	P	
1	BC-101	प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य 1.1.1-1.1.45), पाणिनीय शिक्षा, अष्टाध्यायी (1-2 अध्यायाः)	22	4	2	0	6
2	BC-102	प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य 1.1.45-1.1.74), अष्टाध्यायी (3-4 अध्यायाः)	22	4	2	0	6
3	BC-103	अभिनवपाठावलिः (पूर्वार्धः), रचनानुवादकौमुदी पूर्वार्धः, वैराग्यशतकम्, चर्पटमञ्जरी	22	4	1	0	5
4	BC-104	वैदिकदार्शनिकानां ग्रंथानां सिद्धान्तानाञ्च परिचयः	22	4	1	0	5
5	BC-105	**English Communication-I**	22	4	1	0	5
						TOTAL	**27**

Semester - II

S.No.	Course Code	Course Title	MH	Lecture per week			Total Credit
				L	T	P	
1	BC-201	प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः), अष्टाध्यायी (5-6 अध्यायाः)	22	4	2	0	6
2	BC-202	प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः), अष्टाध्यायी (7-8 अध्यायाः)	22	4	2	0	6
3	BC-203	अभिनवपाठावलिः (उत्तरार्धः), रचनानुवादकौमुदी (उत्तरार्धः), नीतिशतकम् (चिताः श्लोकाः)	22	4	1	0	5
4	BC-204	ऋग्वेदः (अग्निसूक्तम्, श्रद्धासूक्तम्), श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-2), सत्यार्थप्रकाशः (समुल्लासाः- 2,5,7,10)	22	4	1	0	5
5	BC-205	**English Communication-II**	22	4	1	0	5
						TOTAL	**27**

विषय विशेषज्ञ	विषय विशेषज्ञ	विभागाध्यक्ष
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	प्रो. शिवानी वी. डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बैंगलुरू	(डॉ. मनोहर लाल आर्य) प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सहायकपाठ्यक्रमस्य प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्- प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य 1.1.1-1.1.45),

पाणिनीय शिक्षा, अष्टाध्यायी (1-2 अध्यायाः)

पूर्णाङ्क-100
बाह्यमूल्यांकन-70
आन्तरिक मूल्यांकन-30

BC-101

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी में प्रयुक्त पारिभाषिक संज्ञाओं का बोध कराना।
- अष्टाध्यायी का सम्यक् स्मरण।
- वर्णो के उच्चारणस्थानादि का एवं तदगत दोषों का बोध।

परिणाम-

- अष्टाध्यायी में प्रयुक्त संज्ञाओं का ज्ञान हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की तत्सम्बन्धी शास्त्रगत विषयों में गति होती है।
- अष्टाध्यायी का स्मरण हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की व्याकरण शास्त्र में गति होती है। विद्यार्थी की स्मरण शक्ति भी तीव्र होती है।
- अष्टाध्यायी का सम्यक स्मरण व्याकरण शास्त्र पठन में अत्यन्त उपकारक हो जाता है और स्मृति भी बढ़ती है।
- वर्णों का उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न आदि का ज्ञान हो जाने से विद्यार्थी की वाणी शुद्ध एवं परिमार्जीत हो जाती है। जिससे वह यश लाभ करता है।

1. प्रथमावृत्तिः (प्रत्याहारसूत्रसहितौ प्रथमाध्यायस्य 1.1.1-1.1.45) **55**

(क) पदच्छेदः विभक्तिवचनं च
(ख) समासः
(ग) अर्थोदाहरणे
(घ) शब्दसिद्धि

2. अष्टाध्यायी (1-2 अध्यायाः) 15

(क) सूत्रलेखनम्
(ख) सूत्राणामध्यायपादसंख्याज्ञज्ञपनम्

3. वर्णोच्चारणशिक्षा - 15

(क) उच्चारणस्थानादिगत शंका समाधान

सहायकग्रन्थाः-

1. प्रथमावृत्ति : - श्री ब्रह्मदत्तजिज्ञज्ञसुविरचितः
प्रकाशक : - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. अष्टाध्यायी - महर्षिपाणिनिकृता
प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।
3. वर्णोच्चारणशिक्षा - महर्षि दयानन्द विरचित

सहायकपाठ्यक्रमस्य प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्क - 100
बाह्यमूल्यांकन - 70
आन्तरिक मूल्यांकन - 30

द्वितीयपत्रम् - प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य 1.1.45-1.1.74),

अष्टाध्यायी (3-4 अध्यायाः)

BC-102

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी में प्रयुक्त पारिभाषिक संज्ञाओं का ज्ञान एवं बोध कराना।
- अष्टाध्यायी का सम्यक् स्मरण एवं बोध कराना।

परिणाम-

- अष्टाध्यायी में प्रयुक्त संज्ञाओं का ज्ञान हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की तत्सम्बन्धी शास्त्रगत विषयों में गति होती है।
- अष्टाध्यायी का स्मरण हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की व्याकरण शास्त्र में गति होती है।विद्यार्थी की स्मरण शक्ति भी तीव्र होती है।

1. प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य 1.1.45-1.1.74)	55
(क) पदच्छेदः विभक्तिवचनं च	10
(ख) समासः	10
(ग) अर्थोदारणे	15
(घ) शब्दसिद्धिः	20
2. अष्टाध्यायी (3-4 अध्यायाः)	15
(क) सूत्रलेखनम्	10
(ख) सूत्राणामध्यायपादसंख्याज्ञज्ञपनम्	05

सहायकग्रन्थाः-

1. **प्रथमावृत्ति** : - श्री ब्रह्मदत्तजिज्ञज्ञसुविरचितः
   प्रकाशक : - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. **अष्टाध्यायी** - महर्षिपाणिनिकृता
   प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायकपाठ्यक्रमस्य प्रथमसत्रम्

तृतीयपत्रम्- अभिनवपाठावलिः (पूर्वार्धः), रचनानुवादकौमुदी पूर्वार्धः,

वैराग्यशतकम्, चर्पटमञ्जरी

BC-103

पूर्णाङ्क - 100
बाह्यमूल्यांकन - 70
आन्तरिक मूल्यांकन - 30

उद्देश्य-

- मनोहर एवं प्रेरक कहानियों के माध्यम से संस्कृतभाषा का व्यवहारिक ज्ञान कराना।
- अनुवाद, शब्दरूप, धातुरूप का स्मरण एवं निबन्ध लेखन इत्यादि का बोध कराना।
- जीवन में वैराग्य का महत्व तथा जीवन में शुचिता एवं सादगी का बोध कराना।
- संसार की वास्तविकता का ज्ञान कराना।

परिणाम-

- मनोहर एवं प्रेरक कहानियों के माध्यम से संस्कृतभाषा का व्यवहारिक ज्ञान हो जाता है, जिससे विद्यार्थी संस्कृतभाषा का व्यवहारिक प्रयोग सीखता है एवं प्रेरक कहानियों के माध्यम से अपने जीवन को प्रेरित करता है।
- अनुवाद, शब्दरूप, धातुरूप एवं लेखन आदि का ज्ञान होने से विद्यार्थी संस्कृतवाङ्मय के अन्य शास्त्रों को हृदयाङ्गम कर पाता है।
- संसार की वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है, जिससे विद्यार्थी विरक्त एवं त्याग भाव से संसार के कर्त्तव्यों का निर्वहन करता हैं।

1. अभिनवपाठावलिः (प्रथमभागः अध्याय 1-15) 20

(क) शब्दार्थः / अपठितगद्यस्य आर्यभाषानुवादः

(ख) स्वोपज्ञकथालेखनम् (स्वनिर्मितकथालेखनम्)/ विषयात्मकप्रश्नाः

2. रचनानुवादकौमुदी - (1-30 अभ्यासाः) 30

(क) हिन्दीभाषावक्यानां संस्कृतानुवादः (ख) शब्दरूपस्मरणम्

(ग) धातुरूपस्मरणम् (घ) निबन्धलखनम्

3. वैराग्यशतकम् **10**

चयनितश्लोकसंख्याः-3 ,8 ,9 ,10 ,11 ,12 ,13 ,14 ,17 ,18 ,19 ,20 ,21 ,22 ,23 ,25 ,27 ,28 ,31 ,32 ,33 ,35 ,37 ,38 ,39 ,41 ,43 ,44 ,45 ,48 , 49 ,50 ,53 ,73 ,75 ,77

(क) श्लोकपूर्त्तिः (ख) श्लोकव्याख्या

4. चर्पटमञ्जरी 10

(क) श्लोकपूर्तिः (ख) पदच्छेदविभक्तिसमासाः

सहायकग्रन्थाः-

1. अभिनवपाठावलिः- विनायकलक्ष्मीकान्तशर्मविरचिता, प्रकाशकः- मॅक्मिलन् अणि कम्पनी लि.।
2. प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी - डॉ कपिलदेव द्विवेदी, प्रकाशकः - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. वैराग्यशतकम् - भतृहरिप्रणीतम्। प्रकाशकः- चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी।
4. चर्पटमञ्जरी - श्रीशंकराचार्यः, प्रकाशकः दिव्य प्रकाशनम, दिव्ययोगमन्दिर ट्रस्ट, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायकपाठ्यक्रमस्य प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्क - 100
बाह्यमूल्यांकन - 70
आन्तरिक मूल्यांकन - 30

चतुथपत्रम्- वैदिकदार्शनिकानां ग्रंथानां सिद्धान्तानाञ्च परिचयः

BC-104

उद्देश्य-

- दर्शन व वेद का संक्षिप्त बोध।
- वैदिकसिद्धान्तों का बोध जैसे वर्णाश्रम, पुरुषार्थ चतुष्ट्य आदि।
- पञ्चमहायज्ञ व संस्कारों का क्रमानुसार बोध।

परिणाम-

- वेद व दर्शन के प्रारम्भिक ज्ञान में समर्थ होते हैं।
- वैदिक मूलभूत सिद्धान्तों से अच्छे से परिचित हो जाते हैं।
- पञ्चमहायज्ञों का मन्त्र पूर्वक ज्ञान में समर्थ हो जाते हैं।
- षोड्श संस्कारों का क्रमानुसार व विधि विधान को बताने में समर्थ हो जाते हैं।

1. ग्रन्थानां परिचयः **15**

(क) वेदपरिचयः
(ख) दर्शनपरिचयः
(ग) अन्यवैदिकग्रथपरिचयः

2. सिद्धान्तानां परिचयः **55**

(क) त्रैतवादः (ईश्वरः, जीवः, प्रकृतिः)
(ख) वर्णाश्रमव्यस्था
(ग) पुरुषार्थचतुष्टयम्, त्रयी विद्या
(घ) पञ्चमहयज्ञाः
(ङ) षोडश संस्काराः
(च) पुनर्जन्म, कर्मफलव्यवस्था

सहायकग्रन्थाः -

1. आर्यों के सोलह संस्कार - आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः
प्रकाशकः - वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात।
2. वैदिकसिद्धान्तपरिचयः-
प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायकपाठ्यक्रमस्य प्रथमसत्रम्

ENGLISH COMMUNICATION-1
BC- 105

Course Objectives:

- Develop proficiency in speaking, listening, reading, and writing in English for effective communication.
- Build confidence in students to use English in various social and professional contexts.
- Help students speak fluently and coherently in both formal and informal settings.
- Strengthen vocabulary, grammar, and pronunciation to enable students to express themselves accurately and appropriately.
- Develop active listening skills for better comprehension in conversations, lectures, and presentations.
- Improve students' ability to understand, analyze, and interpret written texts, enhancing critical thinking.

Unit 1: Fundamentals of English Grammar and Vocabulary Building	**6 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Sentence Formation • Parts of Speech • Articles • Modals • Direct and Indirect speech	English Grammar in Use by Raymond Murphy, 4th Edition, Cambridge
• Synonyms, Antonyms, Homophones and Homonyms	Word Power Made Easy by Norman Lewis

Unit-2: Reading Skills	**6 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Reading Comprehension (Skimming and Scanning) • Reading Academic Texts • Identifying the main idea of the text	Swami Vivekananda's Speech Of 1893, Chicago Short Story: Premchand, 'The Holy Panchayat'

Unit-3: Listening Skills	**6 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Types of listening, Listening vs Hearing • Listening for details and main ideas • Note- taking skills	Swami Vivekananda's Speech Of 1893, Chicago

Unit-4: Speaking Skills	**6 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Pronunciation (Stress, intonation, rhythm)	*Fundamentals of linguistics* by Raj Kumar Sharma, Atlantic Publishers, 2024.pp. 80-82
• Conversation and dialogue practice • Extempore • Public speaking and presentation skills • Debate and Group discussion	

Unit-5: Writing Skills	**6 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Sentence formation and paragraph writing • Structuring Essays • Writing formal and informal letters • Article writing • Email writing	*Language and Communication Skills*, Cambridge University Press, 2019

Suggested

Course Specific Outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Confidently engage in various conversations in English, demonstrating clarity and fluency.
- Effectively listen to and understand spoken English in different accents and contexts.
- Write clearly and correctly in English for various purposes such as emails, letters and essays.
- Understand and critically analyze different types of written texts (articles, essays, literature, etc.).
- Contribute thoughtfully in group discussions, presentations, and debates.
- Deliver effective oral presentations with confidence, clarity, and the appropriate use of language.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Readings:

- Adair, John. *Effective communication*. 4th Edition, Pan Mac Millan, 2009.
- Dawes, L. *The Essential Speaking and Listening*. Routledge, 2008.
- McCarthy, Micheal, Felicity O'Dell. *Basic Vocabulary in Use.* Cambridge. 2nd Edition, 2010.
- Singh, R.P. *An Anthology of English Essays*. Oxford, 2000.
- Seely, John. *The Oxford Guide to Writing and Speaking*. Oxford University Press, 1998.
- Sharma, Raj Kumar, Bhushan Singh. A Comprehensive English Grammar. Atlantic Publishers, 2019.

सहायकपाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्क - 100
बाह्यमूल्यांकन - 70
आन्तरिक मूल्यांकन - 30

प्रथमपत्रम्- प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः), अष्टाध्यायी (5-6 अध्यायाः)

BC-201

उद्देश्य-

- अष्टाध्यायी में प्रयुक्त पारिभाषिक संज्ञाओं का ज्ञान एवं बोध कराना।
- अष्टाध्यायी का सम्यक् स्मरण एवं बोध कराना।
- सूत्रों को सम्यक् स्मरण एवं बोध कराना।

परिणाम-

- अष्टाध्यायी में प्रयुक्त संज्ञाओं का ज्ञान हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की तत्सम्बन्धी शास्त्रगत विषयों में गति होती है।
- अष्टाध्यायी का स्मरण हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की व्याकरण शास्त्र में गति होती है।विद्यार्थी की स्मरण शक्ति भी तीव्र होती है।
- अष्टाध्यायी के सूत्रों का ठीक प्रकार से स्मरण हो जाता है, जिससे विद्यार्थी व्याकरण शास्त्रों को यथावत् समझने में कुशल हो जाता है।

1. प्रथमावृत्तिः (1.2)		55
(क) पदच्छेदः विभक्तिवचनं च	10	
(ख) समासः		10
(ग) अर्थोदारणे		15
(घ) शब्दसिद्धिः		20
2. अष्टाध्यायी (5-6 अध्यायाः)		15
(क) सूत्रलेखनम्		10
(ख) सूत्राणामध्यायपादसंख्याज्ञापनम्		05

सहायकग्रन्थाः-

1. प्रथमावृत्ति : - श्री ब्रह्मदत्तजिज्ञासुविरचितः

प्रकाशक : - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरयाणा।

2. अष्टाध्यायी - महर्षिपाणिनिकृता

प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्यांकन-70
आन्तरिक मूल्यांकन-30

सहायकपाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- प्रथमावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादः), अष्टाध्यायी (7-8 अध्यायाः)

BC-202

उद्देश्य-

- इत् संज्ञा तथा आत्मनेपद एवं परस्मैपद विषयक बोध प्रदान करना।
- अष्टाध्यायी का सम्यक् स्मरण एवं बोध कराना।

परिणाम-

- इत् संज्ञा का ज्ञान हो जाता है, जिससे शास्त्र में गति होती है।
- अष्टाध्यायी का स्मरण हो जाता है। जिससे विद्यार्थी की व्याकरण शास्त्र में गति होती है।विद्यार्थी की स्मरण शक्ति भी तीव्र होती है।

1. प्रथमावृत्तिः (1.3) **55**

(क) पदच्छेदः विभक्तिवचनं च

(ख) समासः

(ग) अर्थोदारणे

(घ) शब्दसिद्धिः

2. अष्टाध्यायी (7-8 अध्यायाः) **15**

(क) सूत्रलेखनम्

(ख) सूत्राणामध्यायपादसंख्याज्ञापनम्

सहायकग्रन्थाः-

1. प्रथमावृत्ति : - श्री ब्रह्मदत्तजिज्ञासुविरचितः

प्रकाशक : - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरयाणा।

2. अष्टाध्यायी - महर्षिपाणिनिकृता

प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायकपाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्क-100
बाह्यमूल्यांकन-70
आन्तरिक मूल्यांकन-30

तृतीयपत्रम्- अभिनवपाठावलिः (उत्तरार्धः) (द्वितीयभागः अध्याय 1-15),
रचनानुवादकौमुदी (उत्तरार्धः),
नीतिशतकम् (चिताःश्लोकाः)

BC-203

उद्देश्य-

- संस्कृतभाषा की मधुरता एवं व्यवहारिक ज्ञान का मनोहर एवं प्रेरक कहानियों के माध्यम से बोध कराना।
- अनुवाद की कुशलता, शब्दरूप, धातुरूप एवं निबन्ध लेखन आदि का बोध कराना।
- जीवन में नीतिगत विषयों का सम्यक् ज्ञान एवं बोध कराना।

परिणाम-

- विद्यार्थी को संस्कृतभाषा का व्यवहारिक ज्ञान हो जाने से, विद्यार्थी अन्य शास्त्रों को भी ठीक प्रकार समझ पाते हैं एवं प्रेरक कहानियों से उनका जीवन उज्जवल होता है।
- अनुवाद की कुशलता, शब्दरूप, धातुरूप एवं निबन्ध आदि का ज्ञान हो जाता है, जिससे वे संस्कृतभाषा को अपने व्यवहारिक जीवन में प्रयोग कर पाते हैं।
- जीवन में नीतिगत विषयों का ज्ञान हो जाता है, जिससे विद्यार्थी सम्पूर्ण जीवन नीतिगत निर्णय को ठीक प्रकार से समझ पाते हैं।

1. अभिनवपाठावलिः (द्वितीयभागः अध्याय 1-15) 20

2. रचनानुवादकौमुदी - (31-60 अभ्यासाः) 40

(क) हिन्दीभाषावाक्यानां संस्कृतानुवादः

(ख) शब्दरूपस्मरणम्

(ग) धातुरूप्स्मरणम्

(घ) निबन्धालेखनम् / शब्दार्थाः / वाक्यरचना

3. नीतिशतकम् (श्लोकसंख्याः):- 1,3,7,8,10,13,,15,19,20,26,27,,51,55,58, 63,73,75,78,79,82,83,84,103 10

(क) श्लोकपूर्तिः

(ख) श्लोकव्याख्या

सहायकग्रन्थाः:-

1. अभिनवपाठावलिः- विनायकलक्ष्मीकान्तशर्मविरचिता, प्रकाशकः- मॅक्मिलन् अणि कम्पनी लि.

2. रचनानुवादकौमुदी - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, प्रकाशकः- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

3. नीतिशतकम् भर्तृहरिप्रणीतम्, प्रकाशकः- चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

सहायकपाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्क - 100
बाह्यमूल्यांकन - 70
आन्तरिक मूल्यांकन - 30

चतुर्थपत्रम्- ऋग्वेदः (अग्निसूक्तम्, श्रद्धासूक्तम्),
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय-2),
सत्यार्थप्रकाशः (समुल्लासाः- 2,5,7,10)

BC-204

उद्देश्य-

- अग्नि एवं श्रद्धा सूक्त का ज्ञान करना।
- स्थितप्रज्ञ पुरुष के लक्षण एवं स्थित प्रज्ञा से युक्त व्यक्ति का स्वभाव एवं व्यवहार का बोध।
- बालशिक्षा, समाज में प्रचलित भ्रान्तियों, आश्रमव्यवस्था, ईश्वरविषयक, आचार, अनाचार एवं भक्ष्य, अभक्ष्य विषयक ज्ञान का बोध कराना।

परिणाम-

- अग्नि एवं श्रद्धा युक्त का ज्ञान हो जाता है, जिससे विद्यार्थी अर्थबोध कर जीवन में व्यवहार करने में समर्थ हो जाते हैं।
- स्थितप्रज्ञ का लक्षण एवं स्थितप्रज्ञा से युक्त व्यक्ति का स्वभाव एवं व्यवहार का ज्ञान हो जाता है, जिससे विद्यार्थी स्थितप्रज्ञा से युक्त व्यक्ति एवं सामान्य व्यक्ति को पहचान पाते हैं, एवं स्थितप्रज्ञा से युक्त हो जाते हैं।
- बालशिक्षा, समाज में व्याप्त भ्रान्तियों, आश्रमव्यवस्था आदि का ज्ञान हो जाता है, जिससे विद्यार्थी तत्विषयक ज्ञान से युक्त हो जाते हैं।

1. वेदः- ऋग्वेदः (अग्निसूक्तम् 1.1, श्रद्धासूक्तम् 10.151) **15**

(क) मन्त्रपूर्तिः, (ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्
(ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम्

2. गीता (अध्याय - 2) स्थितप्रज्ञप्रकरणम् **15**

(क) श्लोकपूर्तिः (ख) श्लोकान्वयः
(ग) श्लोकार्थः

3. सत्यार्थप्रकाशः (समुल्लासाः- 2,5,7,10) **30**

(क) बालशिक्षाविषयः / भूतप्रेतादिनिषेधः / जन्मपत्रसूर्यादिग्रहः समीक्षा
(ख) वानप्रस्थसंन्यासाश्रमविधिः (ग) ईश्वरविषयः

सहायकग्रन्थाः-

1. ऋग्वेदः- व्याख्याकारः डॉ. जियालाल कम्बोज, प्रकाशकः- विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
2. श्रीमद्भगवद्गीता- प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशनम, दिव्य योगमन्दिर ट्रस्ट, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।
3. सत्यार्थप्रकाश :- महर्षिदयानन्दकृतः, प्रकाशकः आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट देहली।

सहायकपाठ्यक्रमस्य द्वितीयसत्रम्

ENGLISH COMMUNICATION-2
BC-205

पूर्णाङ्क - 100
बाह्यमूल्यांकन - 70
आन्तरिक मूल्यांकन - 30

Course Objectives:

- To develop advanced speaking, listening, reading, and writing skills in English.
- To enhance the ability to communicate effectively in professional, academic, and social settings.
- To improve pronunciation, fluency, and vocabulary.
- To provide exposure to various forms of written communication, including reports, essays, and research papers.

Unit 1: Vocabulary Expansion	**6 Hours**
Topics	Prescribed Text
• Using phrasal verbs, idioms, and collocations appropriately. • Learning words in context (academic, professional, and social contexts).	*Advanced English Vocabulary in Use* by Micheal McCarthy and Felicity O'Dell. Cambridge

Unit-2: Reading Comprehension and Analysis	**8 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Strategies for reading academic texts, articles, and books. • Analysing arguments, structure, and evidence in texts.	The Efficient Reading Skills by Iyabode Omolara Akewo Daniel in *Communication and Language Skills*. Cambridge University Press.
Critical Analysis of a literary text	*The Mahabharata*: A Shortened Modern Prose Version of the Indian Epic by R.K. Narayan

Unit-3: Advanced Speaking Skills	**8 Hours**
Topics	Prescribed Texts
Public Speaking • Preparing speeches and presentation • Techniques for effective public speaking (Body language, eye contact and voice modulation) **Debates and Group Discussions** • Strategies for formal debates • Critical Thinking and Analytical Skills • Leadership and Teamwork in Discussions **Interview Skills** • Different types of interviews • Identifying your strengths, weaknesses, skills, and achievements • Prepare answers to typical interview questions. • Understanding body language and other non-verbal cues.	*Communication Skills* by Leena Sen, 2nd Edition, PHI Learning.

Unit 4: Academic and Professional Writing	8 Hours
Topics	Prescribed Texts
Essay Writing • Structure of Academic Essays • Developing arguments Academic Writing • Conventions of Academic Writing • Summarizing and Paraphrasing Business Writing • Writing formal emails, memos, and reports. • Creating professional documents (e.g., CVs, cover letters). • Writing persuasive proposals and business letters.	Academic Writing and Composition" by Sharmila Majumdar in Introduction to Undergraduate English, Book 2 by Parthapratim Bandyopadhyay et al. Cambridge University Press, 2018. pp.105-137. *Communication Skills* by Leena Sen, 2nd Edition, PHI Learning.

Course Specific Outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Ability to speak English confidently and fluidly in diverse social, academic, and professional contexts.
- Advanced skills in reading and understanding complex texts, including academic articles, reports, and literary works.
- Ability to deliver clear, confident, and structured presentations in both professional and academic environments.
- Ability to perform well in interviews, networking events, and other job-related communication tasks.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Suggested Readings:

- Adair, John. *Effective communication*. 4th Edition, Pan Mac Millan, 2009.
- Dawes, L. *The Essential Speaking and Listening*. Routledge, 2008.
- Lewis, Norman. *Word Power Made Easy.*
- Singh, R.P. *An Anthology of English Essays*. Oxford, 2000.

Seely, John. *The Oxford Guide to Writing and Speaking*. Oxford University Press, 1998